❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।

अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 4 सितम्बर, 2017 से रविवार 10 सितम्बर, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पितृयज्ञ या श्राद्ध-तर्पण किसका?

...... 'तर्पण और श्राद्ध' जिसका वास्तविक एवं उदात्त चित्रण महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ 'पञ्च महा यज्ञ-विधि' में किया है। ऋषि ने पञ्चमहा यज्ञों का विधान प्रत्येक गृहस्थ के लिए किया है। जिनमें तृत्तीयः पितृमहा यज्ञ' हैं। .... ऋषि के मन्तव्यों का पालन करना होगा यह प्रतिज्ञा आज ही करनी होगी। तभी तो आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार, प्रसार होगा तभी हम तर्पण और श्राद्ध की वास्तविकता को समझेंगे, और उसकी सार्थकता को सिद्ध कर पाएँगे। जिससे राष्ट्र में ज्ञान की निर्मल धारा बहेगी, स्वर्ग आएँगा। हमारा तर्पण और श्राद्ध सफल होगा। .....

जिस प्रकार संसार में सूर्य उदय होकर सारे अन्धकार को नष्ट कर प्रकाश फैलाता है। इस प्रकार इसी दुःखी, आर्त्त, व्यक्त, एवं अविद्या से ग्रस्त इस आर्य जाति के लिए महानतम वेद रूपी विद्या का प्रकाश लेकर महर्षि दयानन्द का उद्भव हुआ। जिस समय भारत अपने भयंकर दुर्दिनों से पीड़ित मृत प्रायः हो रहा था। उस समय ज्ञानरुपी संजीवनी लेकर उस युग के निर्माता आध्यात्मिक वैद्य बनकर उपस्थित हुए। और ऐसे भयंकर विषधर जो अपने विष के भय से भोली जनता से यथेष्ट दुग्ध पान कर रहे थे और अपने विष को बढ़ा रहे थे। यह उक्ति एक तो विदेशी आक्रान्ताओं की ओर इशारा करती है दूसरी ओर धर्म के तथाकथित ठेकेदारों की ओर इशारा करती है। आज मैं उस ओर जाना नहीं चाहता केवल धर्म में आए विकार की ओर आपका ध्यान चाहता हूं।

आज का विषय है 'तर्पण और श्राद्ध' जिसका वास्तविक एवं उदात्त चित्रण महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ 'पञ्च महा यज्ञ-विधि' में किया है। ऋषि ने पञ्चमहा यज्ञों का विधान प्रत्येक गृहस्थ के लिए किया है। जिनमें तृत्तीयः पितृमहा यज्ञ' हैं। महर्षि लिखते है- **"तस्य द्वौ भेदौ स्तः एकस्तर्पणाख्यो, द्वितीयः श्राद्धाख्यश्च। येन कर्मणा विदुषो देवानृषीन् पितृंश्च तर्पयन्ति सुखयन्ति तत् तर्पणम्। तथा यत्तेषां श्रद्धया सेवनं क्रियते तत् श्राद्धं वेदितव्यम्।"**

अपने जीवित पितरों - माता, पिता, आचार्य, बुजुर्गों, अतिथि की सेवा, सुश्रुषा, भोजन आदि या मृत बुजुर्गों, पारिवारिक जनों के भोजन के नाम पर श्राद्ध-तर्पण आओ करें विचार

अर्थात् पितृयज्ञ के दो भेद हैं- एक तर्पण दूसरा श्राद्ध। जिस कर्मों से विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों (पिता-माता-दादा-दादी-व अन्य) को सुख युक्त करते हैं, उसे तर्पण कहते हैं। उसी प्रकार जो उन लोगों का श्रद्धा से सेवन करना है, सो श्राद्ध कहलाता है। आगे ऋषि कहते है कि- 'यह तर्पणादि कर्म जो प्रत्यक्ष (विद्यमान) है उन्हीं में घटता हैं, मृतकों में नहीं, क्योंकि उनकी प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना दुर्लभ है। इसी से उनकी सेवा भी किसी प्रकार से नहीं हो सकती।

- शेष पृष्ठ 8 पर

भारत सरकार में केन्द्रीय मन्त्री बनाए जाने पर डा. सत्यपाल सिंह जी को आर्यसमाज की ओर से हार्दिक बधाई

प्रख्यात वैदिक वक्ता एवं आर्यनेता डॉ. सत्यपाल सिंह जी को प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा भारत सरकार में मानव संसाधन राज्य मन्त्री बनाए जाने पर दिल्ली आर्यसमाज की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं। शुभकामनाएं देते दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री सतीश चड्ढा, उत्तर पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन माण्डले (म्यांमा) : 6-7-8 अक्तूबर, 2017

आर्य संन्यासी महानुभावों, आजीवन ब्रह्मचारी, वैदिक विद्वान एवं वानप्रस्थियों हेतु विशेष यात्रा व्यवस्था

आपको विदित ही है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 06, 07 तथा 08 अक्टूबर 2017 को म्यांमार (बर्मा) के माण्डले शहर में आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में आर्य संन्यासी महानुभावों, आजीवन ब्रह्मचारियों, वैदिक विद्वानों एवं वानप्रस्थी महानुभावों के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार द्वारा साधारण ए.सी. आवास व्यवस्था, एटैच बाथरूम उपलब्ध कराई गई है। अतः यात्रा नं. 3 का विकल्प तैयार किया गया है। **इसमें यात्रा शुल्क दिल्ली से मात्र 45 हजार रुपये और कोलकाता से 40 हजार रुपये निश्चित किया गया है।** स्थानीय भ्रमण व्यवस्था यात्रियों को स्वयं करनी होगी। इस व्यवस्था में **केवल 15 सीटें ही उपलब्ध** हैं। इस यात्रा विकल्प के सभी यात्री महानुभाव 4 अक्तूबर को नई दिल्ली और कोलकाता से उड़ान भरेंगे। **नई दिल्ली /कोलकाता से रंगून - रंगून से डीलक्स ए.सी. बस द्वारा मांडले। दिनांक 9 अक्तूबर को डीलक्स ए.सी. बस द्वारा मांडले से रंगून और वहां से नई दिल्ली/कोलकाता हवाई अड्डा।** जो आर्य संन्यासी महानुभाव, आजीवन ब्रह्मचारी, वैदिक विद्वान एवं वानप्रस्थी इस यात्रा सेवा का लाभ लेना चाहते हों वे तत्काल आवेदन करें। आवेदन पत्र पृष्ठ 7 पर दिया गया है तथा सभा की वैबसाइट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड भी किया जा सकता है।च्च अधिक जानकारी के लिए **श्री एस.पी. सिंह जी (09540040324)** से सम्पर्क करें। यात्रा शुल्क राशि **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बैक ड्राफ्ट द्वारा **श्री प्रकाश आर्य जी, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,** 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें। अन्य नियम व शर्तें पूर्ववत रहेंगी। -

संयोजक

वेद-स्वाध्याय

हमें सविता देव का श्रेष्ठ दान ही मिले

देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने।
यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः।। ऋ. 6/71/2
ऋषिः **भारद्वाजो बार्हस्पत्यः।।** देवता - **सविता।।** छन्दः **निचृज्जगती।।**

शब्दार्थ - **यः विश्वस्य द्विपदः** = जो तू सब दो पैरवालों तथा **चतुष्पदः** = जो तू चार पैरवाले जीवों का **निवेशने असि** = आश्रय देनेवाला है **भूमनः प्रसवे च (असि)** = और बड़े भारी संसार को प्रेरणा देनेवाला है **सवितुः देवस्य** = उस तुझ प्रेरक देव के **श्रेष्ठे सवीमनि** = श्रेष्ठ प्रेरणा में **वयं स्याम** = हम हों **वसुनश्च** = तथा तेरे ऐश्वर्य के **(श्रेष्ठे) दावने** = श्रेष्ठ दान में हों।

विनय - सब जगत् की स्थिति करने वाले और सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले तुम्हीं हो। ये जो जगत् में असंख्य चेतन प्राणी दिखाई देते हैं- जो दो पैरवाले मनुष्य विचरते हैं या जो चार पैरों पर ये 'पशु' नामक प्राणी फिरते हैं- इन सबकी स्थिति व पालन करने वाले तुम हो, तुम ही इन सबके पैदा करने वाले भी हो। यह अखिल ब्रह्माण्ड तुमसे शुरू हुआ है और तुम्हारे ही अखण्ड शासन में चल रहा है। इस अपरिमेय संसार में जो हिलना-डुलना हो रहा है, जो इसमें एक-एक चेष्टा, एक-एक क्रिया हो रही है उसके आदिप्रवर्तक तुम हो। हवा द्वारा जो एक तिनका भी हिलता है वह तुम्हारी आज्ञा से हिलता है। इसलिए हे सर्वप्रेरक देव! हे सवितः! हमारी तुमसे एक प्रार्थना है। हम चाहते है। कि हम सदा तुम्हारी श्रेष्ठ प्रेरणा में हों और तुम्हारे ऐश्वर्यों के श्रेष्ठ दान में हों। इस जगत् में जो कुछ श्रेष्ठ व अश्रेष्ठ हो रहा है, वह सब-कुछ तुम्हारी ही दी हुई शक्ति से हो रहा है, पर हम चाहते हैं कि हमारे शरीरों से, मनों से, वाणियों से जो कुछ भी चेष्टा हो वह सब श्रेष्ठ ही हो। हमारे शरीरों, मनों द्वारा तुम्हारी श्रेष्ठ प्रेरणा का ही प्रवाह बहे। अच्छा-बुरा सब प्रकार का सब ऐश्वर्य बेशक तुम द्वारा ही संसार में बरस रहा है, परन्तु हमें तुम्हारे ऐश्वर्य का श्रेष्ठ दान ही मिले। संसार में बुरी कमाई से पैदा हुआ और बुरे काम में उपयुक्त होनेवाला ऐश्वर्य भी होता है तथा अच्छी कमाई का और सदुपयुक्त होनेवाला श्रेष्ठ ऐश्वर्य भी होता है। हमारे पास यह दूसरा ऐश्वर्य ही हो। यह ऊंचा-नीचा, अच्छा-बुरा,उत्तम-अधम यह जो नाना प्रकार का संसार है यह समग्र विश्व तुम्हारी ही विभूति है। हम चाहते हैं कि हम तुम्हारी ऊंची विभूति के अंश बनें। अपने को उच्च बनाने के लिए जिन-जिन साधनों को जानते हैं उन्हें हम बड़े यत्न से कर रहे हैं, अपने को अधिकारी बना रहे हैं, इसलिए हमें तुम श्रेष्ठ प्रेरणा का पात्र बनाओ और हमें श्रेष्ठ प्रेरणा करो, हमें श्रेष्ठ ऐश्वर्य का पात्र बनाओ और श्रेष्ठ ऐश्वर्य प्रदान करो।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

माँ की नृशंस हत्या

...महाराष्ट्र के कोल्हापुर में 27 साल का एक बेटा अपनी ही मां का दिल निकालकर चटनी के साथ खा गया। वारदात के वक्त आरोपी बेटा सुनील शराब के नशे में चूर था। शराब के नशे में घर आए सुनील का अपनी मां से झगड़ा हो गया था। जिस पर उसने अपनी माँ पर ताबड़तोड़ चाकू से वार किये, घटना स्थल पर एक प्लेट में चटनी और मिर्च लगा मां का दिल पड़ा था।....आज हर कोई गुमशुदा है, हर किसी ने सोशल मीडिया पर अपने-अपने रिश्तों के काल्पनिक जंगल उगा रखे हैं और उसमें भटक रहे हैं। आज एक तरह से सामाजिक रिश्तों की बलि दी जा रही है!...

मेरे अन्दर का इंसान, भयभीत है, कुछ जिन्दा है और जितना जिन्दा है वह बेहद शर्मिंदा है। खबर ही कुछ ऐसी है जिसे पढ़कर हर कोई सकते में आ जाये। महाराष्ट्र के कोल्हापुर में 27 साल का एक बेटा अपनी ही मां का दिल निकालकर चटनी के साथ खा गया। वारदात के वक्त आरोपी बेटा सुनील शराब के नशे में चूर था। शराब के नशे में घर आए सुनील का अपनी मां से झगड़ा हो गया था। जिस पर उसने अपनी माँ पर ताबड़तोड़ चाकू से वार किये, घटना स्थल पर एक प्लेट में चटनी और मिर्च लगा मां का दिल पड़ा था। हालाँकि मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया। लेकिन तब तक कोख से जन्मा राक्षस, मानवीय इतिहास की सबसे क्रूर घटना को अंजाम दे गया।

सालों पहले एक गीत सुना था ''माँ का दिल'' जिसमें एक बेटा अपनी प्रेमिका का दिल जीतने के लिए चाकू से अपनी माँ का दिल निकालकर ले जाता है। फिर रास्ते में उसे ठोकर लगती है और वह गिरता है तो माँ का दिल कहता है बेटा चोट तो नहीं लगी। पता नहीं सुनील की माँ के दिल ने क्या कहा होगा? यह गीत ऐसा है कि कठोर से कठोर दिल वाला भी सुनकर भावुक हो जाये, इस गीत को सुनकर मैं हमेशा सोचता रहा कि शायद ऐसा कुछ हमारे वास्तविक जीवन और समाज में नहीं होता होगा। यह एक काल्पनिक गीत है लेकिन यह घटना पढ़कर लगा कि कोख से राक्षस अभी भी पैदा हो रहे है और ममता पर खंजरों से वार भी कर रहे हैं।

हालाँकि मानवीय संवेदनाओं का शीघ्रपतन आजकल इतनी जल्दी-जल्दी हो रहा है कि इस खबर के लिए देश के पास बिल्कुल समय नहीं था; हो भी कहाँ से! यहाँ तो हर कोई गुमशुदा है, हर किसी ने सोशल मीडिया पर अपने-अपने रिश्तों के काल्पनिक जंगल उगा लिए और उसमें भटक रहे हैं। एक तरह से सामाजिक रिश्तों की बलि सी दी जा रही है। एक इंसान के रूप में पैदा होने वाले लोग यदि इस तरह की घटनाओं पर मूक बने रहे तो क्या यह इंसानियत के नाम पर कलंक नहीं है?

कुछ इसी तरह की एक दूसरी घटना थोड़े दिन पहले मुम्बई से प्रकाशित हुई थी। जिसे मीडिया ने काफी प्रसारित भी किया था। पहली घटना में माँ की ममता का क्रूर कत्ल हुआ तो दूसरी में संवेदना का। हुआ यूँ कि एक शख्स डेढ़ साल बाद जब अमेरिका से मुम्बई स्थित अपने घर लौटा तो उसने देखा कि उसका फ्लैट अंदर से बंद है। उसकी मां उस घर में अकेली रह रही थी। जब बार-बार घंटी बजाने पर भी दरवाजा नहीं खोला, तो दरवाजा तोड़कर वह अंदर घुसा। उसने देखा कि फ्लैट के अंदर उसकी मां की जगह बिस्तर पर उसका कंकाल पड़ा है। उसके पिता की मौत चार साल पहले ही हो चुकी थी। आखिरी बार डेढ़ साल पहले उसने मां से बात की तो उन्होंने कहा था कि वह अकेले नहीं रह सकती। वह बहुत डिप्रेशन में है। वह वृद्धाश्रम चली जाएगी, बावजूद इसके बेटे पर इसका कोई असर नहीं हुआ। अप्रैल 2016 में फोन पर हुई उस आखिरी बातचीत के बाद लड़के की कभी मां से बात नहीं हुई। तकरीबन डेढ़ साल बाद जब वह घर आया तो उसे मां की जगह उसका कंकाल मिला।

यहाँ बात किसी अन्य पारिवारिक रिश्ते की नहीं बात सिर्फ एक मां की हो रही है। वह मां जिसे गर्भावस्था में किसी खास सूरत में अगर डॉक्टर ये भी बता दे कि आप उस पोजीशन में मत सोइएगा, वरना बच्चे को तकलीफ होगी तो वह सारी रात करवट नहीं बदलती। यदि उसका बच्चा रात में डर जाये तो वह पूरी रात नहीं सो पाती। पता नहीं यह बेटा डेढ़ साल तक उसके बिना कैसे सोया होगा?

एक कविता की पंक्ति है कि -

माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पालना है,
माँ मरुस्थल में नदी या मीठा सा झरना है,
माँ संवेदना है, भावना है, अहसास है,
माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है,
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है,
माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है,
माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है,
अरे माँ तो बहती ममता की धारा है।।

आखिर समाज आज किस चीज के लिए अपने रिश्तों, अपनी संवेदना का कत्ल कर रहा है।क्या यह हमारी बदनसीबी नहीं है कि अपनी संवेदना का गला अपने हाथों घोट देते हैं, अधिकाँश लोग इन घटनाओं को पढ़कर, देखकर आहत होकर पत्थर बनना ही पसंद करते हैं कि एक राक्षस ने माँ का दिल निकालकर चटनी से खा लिया और दूसरे ने डेढ़ साल तक माँ से बात करना जरूरी नहीं समझा। न उसे माँ की चिंता रही होगी। अड़ोस-पड़ोस में भी किसी ने गवारा नहीं समझा कि पूछ ले इस फ्लैट में एक बुढ़िया रहती थी जो कई दिन से, कई महीनों से दिखाई नहीं दी। इस पूरे शहर में, पूरी रिश्तेदारी में एक भी ऐसा इंसान नहीं था जिसने उस महिला से सम्पर्क करने की कोशिश की हो और बात न होने पर वह घबराया हो? शायद आज किसी के पास फुरसत नहीं है। सब अपनी-अपनी जिन्दगी में व्यस्त हैं लेकिन फ्लैट में कंकाल जरूर बुजुर्ग औरत का मिला है, प्लेट में दिल एक माँ का चटनी में सना मिला है, मगर मौत शायद पूरे समाज की हुई है और इसी समाज का हिस्सा होने पर हमें थोड़ा शर्मिंदा होना जरूरी बनता है। हम कहाँ जा रहे हैं?

- सम्पादक

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
5,10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

मुगल इतिहास में जरुर रहने चाहिएं लेकिन .....!

...महाराष्ट्र राज्य शिक्षा बोर्ड ने इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में से मुगलों को गायब करना शुरू कर दिया है। इस शिक्षण वर्ष में बोर्ड ने सातवीं और नौवीं कक्षा के लिए इतिहास का संशोधित पाठ्यक्रम प्रकाशित किया है, जिसमें शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य पर मुख्य रूप से जोर दिया गया है। सातवीं कक्षा की पुस्तकों में से उन अध्यायों को हटा दिया गया है जिसमें मुगलों और मुगल शासन से पहले भारत के मुस्लिम शासकों जैसे रजिया सुल्ताना और मुहम्मद बिन तुगलक के बारे में उल्लेख था। .....इतिहास से मुगल नहीं मिटने चाहिए बल्कि इस झूठी उदारता की जगह वह सच लिखा जाना चाहिए जिसके छल-बल से इन्होंने यहाँ राज किया ताकि आने वाली नस्लों को पता चले कि इनकी मजहबी सनक के कारण भारतीय समुदाय हमारे पूर्वजों का कितना मान मर्दन हुआ। जो लोग आज भी औरंगजेब के नाम का गुणगान करते हैं । उनसे पूछिए कि दाराशिकोह ने ऐसा कौन सा गुनाह किया कि उसके नाम को आप भुलाना चाहते हैं और औरंगजेब ने क्या ऐसा काम किया कि उसके नाम का गुणगान करना चाहते हैं? आखिर जिन पुस्तकों में वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, चांद बीबी और रानी दुर्गावती ने देश की अस्मिता और संस्कृति बचाने के लिए इन लुटेरों के खिलाफ संघर्ष किया।.....

टोपी सिलकर गुजारा करता था औरंगजेब। अकबर एक महान उदार राजा था। शेरशाह सूरी ने रोड बनवाई थी, किसी मुगल ने ताजमहल तो किसी ने लालकिला बनवाया। कुछ ऐसी ही कहानियाँ हम बचपन से पढ़ते आ रहे हैं और सोचते हैं कि यदि यह सब सच है तो फिर लाखों हिन्दुओं और अपने सगे भाई दाराशिकोह की गर्दन धड़ से अलग करने वाला मुगल बादशाह कौन था? आजकल इसी इतिहास को लेकर राजनैतिक हलकों में जो शोर है। यह शोर इतिहास की उन लाखों निर्दोषों की चीख पुकार पर हावी है जिसे जबरन धर्म परिवर्तन कराने वाले मुगल शासक औरंगजेब ने इतिहास की उदार टोपी पहनाकर दबा दिया था।

अगस्त 1947 जब अंग्रेजों की दासता से जकड़े भारत ने आजादी की पहली खुली साँस ली थी तो हमें मुगलों की धर्मनिरपेक्षता और उदारता के पाठ पढ़ने को मिले। किन्तु अब महाराष्ट्र राज्य शिक्षा बोर्ड ने इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में से मुगलों को गायब करना शुरू कर दिया है। इस शिक्षण वर्ष में बोर्ड ने सातवीं और नौवीं कक्षा के लिए इतिहास का संशोधित पाठ्यक्रम प्रकाशित किया है जिसमें शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य पर मुख्य रूप से जोर दिया गया है। सातवीं कक्षा की पुस्तकों में से उन अध्यायों को हटा दिया गया है जिसमें मुगलों और मुगल शासन से पहले भारत के मुस्लिम शासकों जैसे रजिया सुल्ताना और मुहम्मद बिन तुगलक के बारे में उल्लेख था।

अच्छा जो लोग आज भी औरंगजेब के नाम का गुणगान करते हैं उनसे पूछिए कि दाराशिकोह ने ऐसा कौन सा गुनाह किया कि उसके नाम को आप भुलाना चाहते हैं और औरंगजेब ने क्या ऐसा काम किया कि उसके नाम का गुणगान करना चाहते हैं? आखिर जिन पुस्तकों में वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, चांद बीबी और रानी दुर्गावती ने देश की अस्मिता और संस्कृति बचाने के लिए इन लुटेरों के खिलाफ संघर्ष किया। जहाँ उनका संघर्ष उल्लेखनीय होना चाहिए था वहां अकबर को उदार और सहिष्णु शासक के तौर पर दिखाया गया है जो शिक्षा एवं कला का संरक्षक था। अकबर का उल्लेख एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर किया गया। उनको दीन-ए-इलाही जैसे धर्म का संस्थापक भी बताया गया गया। फिर जोधाबाई से जबरन शादी करने वाला कौन था?

दूसरा सवाल आतंकी संगठन आई.एस.आई.एस.आई. के बारे में जब हम पढ़ते हैं कि वह अल्पसंख्यक यजीदी महिलाओं को यौन गुलाम बना रहा है तो हमें आश्चर्य होता है, लेकिन आपको जानकर आश्चर्य होगा कि दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों व मुगल बादशाहों ने भी बहुसंख्यक हिन्दू महिलाओं को बड़े पैमाने पर यौनदासी यानी सैक्स स्लेव बनाया था। इसमें मुगल बादशाह शाहजहां का हरम सबसे अधिक बदनाम रहा, जिसके कारण दिल्ली का रेड लाइट एरिया जी.बी.रोड बसा। इतिहासकार वी.स्मिथ ने लिखा है, शाहजहाँ के हरम में 8000 रखैलें थीं जो उसे उसके पिता जहाँगीर से विरासत में मिली थीं। उसने बाप की सम्पत्ति को और बढ़ाया। उसने हरम की महिलाओं की व्यापक छाँट की तथा बुढ़ियाओं को भगाकर और अन्य हिन्दू परिवारों से बलात लाकर हरम को बढ़ाता ही रहा।

हम भी कहते हैं इतिहास से मुगल नहीं मिटने चाहिए बल्कि इस झूठी उदारता की जगह वह सच लिखा जाना चाहिए जिसके छल-बल से इन्होंने यहाँ राज किया ताकि आने वाली नस्लों को पता चले कि इनकी मजहबी सनक के कारण भारतीय समुदाय हमारे पूर्वजों का कितना मान मर्दन हुआ। हत्याएं बलात् धर्मपरिवर्तन का सभी सच लिखा जाना चाहिए ताकि आने वाली नस्लें यदि इतिहास का कोई पन्ना निचोंड़े तो उसमें से दर्द, आंसू और खून निकल आये।

आर.सी. मजूमदार, अपनी पुस्तक हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ द इण्डियन पीपुल में लिखते हैं कि कश्मीर से लौटते समय 1632 में शाहजहाँ को बताया गया कि अनेकों मुस्लिम बनायी गयी महिलायें फिर से हिन्दू हो गईं हैं और उन्होंने हिन्दू परिवारों में शादी कर ली है। शहंशाह के आदेश पर इन सभी हिन्दुओं को बन्दी बना लिया गया। उन सभी पर इतना आर्थिक दण्ड थोपा गया कि उनमें से कोई भुगतान नहीं कर सका। तब इस्लाम स्वीकार कर लेने और मृत्यु में से एक को चुन लेने का विकल्प दिया गया। जिन्होंने धर्मान्तरण स्वीकार नहीं किया, उन सभी पुरुषों का सिर काट दिया गया। लगभग चार हजार पाँच सौ महिलाओं

- शेष पृष्ठ 7 पर

बोध कथा

अतिथि यज्ञ : हमारी संस्कृति का महान आधार

राजा रन्तिदेव की कहानी है। उन्होंने अतिथि-यज्ञ को इस सीमा तक पहुंचाया कि अतिथि उनसे जो भी मांगते, वही उठाके दे देते।

एक बार उनके राज्य में भयानक अकाल पड़ा। महाराज रन्तिदेव के यहां कितने ही दु:खी और भूखे मनुष्य आने लगे। महाराज ने अपने अनाज के भण्डार उनके लिए खोल दिए। अपने कोषों के द्वार खोल दिये। धीरे-धीरे सारा कोष समाप्त हो गया, सारा अन्न समाप्त हो गया, कपड़े भी समाप्त हो गये। महाराज रन्तिदेव ने अपने रिक्त महल को देखा तो उनका हृदय रो उठा। इसलिये नहीं कि वे निर्धन हो गए, अपितु इसलिये कि यदि अचानक कोई अतिथि आ गया, कोई आवश्यकता वाला आ गया तो उसे देंगे क्या?

इस विचार के आते ही, वे अपनी रानी और छोटे पुत्र को लेकर महल के बाहर चल पड़े। नगर के बाहर निकल गये। उजड़े हुए उद्यानों और निर्जन क्षेत्रों से भी आगे चले गये-उन वनों में जहां जल नहीं था, खाने को भी नहीं था। एक दिन, दो दिन, तीन दिन, दस, बीस-इसी प्रकार चालीस दिन व्यतीत हो गये। कभी-कभी सूखे पत्ते खाकर निर्वाह कर लेते। कभी-कभी वे भी न मिलते। शरीर की शक्ति समाप्त हो गई। सूखकर वे तीनों-महाराज, महारानी और राजकुमार हड्डियों का ढांचा रह गये। ऐसी अवस्था हो गई कि उठकर चलना भी कठिन हो गया। चालीसवें दिन वे एक सूखे वृक्ष के नीचे बैठे थे। एक सज्जन वहां आये। ताज़ा भोजन से पूर्ण एक थाल उनके पास था। उसने तीनो के आगे भोजन परोसा। ताज़ा ठंडा जल भी रख दिया और यह कहकर चला गया-''तुम खाओ, मुझे आगे यात्रा पर जाना है।''

तीनों आचमन करके खाने को बैठे। महाराज रन्तिदेव का कांपता हुआ हाथ भोजन की ओर बढ़ा तो उनका हृदय कांप उठा। एक हूक-सी उठी हृदय से-'हाय! आज क्या किसी अतिथि को भोजन कराये बिना ही हम भोजन करेंगे? आज तक जो कार्य नहीं किया, क्या वह आज करेंगे?' तभी दूर से दो ब्राह्मण आते दृष्टिगोचर हुए। रन्तिदेव के पास आकर उन्होंने कहा-''हमें भूख लगी है, क्या आप थोड़ा भोजन दे सकते हैं?''

रन्तिदेव प्रसन्न होकर बोले-''अवश्य!'' और अपने सामने रखा हुआ भोजन उन्होंने दोनों ब्राह्मणों को बांट दिया। इससे अतिथियों की क्षुधा शान्त न हुई तो महारानी का भोजन भी उन्हें दे दिया। पानी भी पिला दिया। दोनों प्रसन्न होकर चले गये। महाराज ने राज कुमार के भोजन को तीन भागों में विभक्त किया। उसे खाने ही लगे कि दो और यात्री आ गये। वे तीनो का भोजन खा गए। केवल थोड़ा-सा जल शेष रह गया। महाराज ने कहा-''चलो थोड़ा-थोड़ा पानी पीकर ही निर्वाह कर लो।''

तभी एक चाण्डाल आया, प्यास से बिलखता हुआ; बोला-''प्यासा हुं, पानी पिला दो!''

महाराज रन्तिदेव ने सारा पानी उसे पिला दिया। कुछ भी उनके पास न रहा। तभी उनके आत्मा के अन्दर से यह ध्वनि आई-''रन्तिदेव! अतिथि-यज्ञ की परीक्षा में तुम सफल हुए। सब-कुछ तुम्हें मिल सकता है। बोलो, क्या चाहते हो?''

रन्तिदेव ने कांपते हुए ओठों से कहा-''नहीं चाहिए मुझे स्वर्ग, नहीं चाहिए राज्य और भोग। देना चाहते हो दाता, तो एक यही वर दो कि मैं दु:खी लोगों के हृदय में निवास कर सकूं। उनके दु:ख दूर कर सकूं, उनका कल्याण कर सकूं।''

रन्तिदेव बनना सरल नहीं, फिर भी अतिथि-यज्ञ की भावना तो हृदय में उत्पन्न करनी ही चाहिए। अतिथि-यज्ञ हमारी संस्कृति का एक महान् आधार है। इसीलिए इसे आर्य लोगों में जीवन के दैनिक कर्मों का एक अंग बताया गया है।

साईं इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय।।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

त्योहार के नाम पर सेक्यूलर घोटाला

.....बचपन में हमें अपने पाठयक्रम में पढ़ाया जाता रहा है कि रक्षाबंधन के त्योहार पर बहने अपने भाई को राखी बांध कर उनकी लम्बी आयु की कामना करती हैं। रक्षा बंधन का सबसे प्रचलित उदहारण चित्तौड़ की रानी कर्णावती और मुगल बादशाह हुमायूँ का दिया जाता है। कहा जाता है कि जब गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर हमला किया तब चित्तौड़ की रानी कर्णावती ने मुगल बादशाह हुमायूं को पत्र लिख कर सहायता करने का निवेदन किया था। पत्र के साथ रानी ने हुमायूं को भाई समझ कर राखी भी भेजी थी। हुमायूं रानी की रक्षा के लिए आया मगर तब तक देर हो चुकी थी। रानी ने जौहर कर आत्महत्या कर ली थी। इस इतिहास को हिन्दू-मुस्लिम एकता के तौर पर पढ़ाया जाता है। .....

अब पढ़िए सेक्युलर खोटाला का सच

- डॉ. विवेक आर्य

हमारे देश का इतिहास सेक्युलर इतिहासकारों ने लिखा है। भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम थे। जिन्हें साम्यवादी विचारधारा के नेहरू ने सख्त हिदायत देकर यह कहा था कि जो भी इतिहास पाठयक्रम में शामिल किया जाये। उस इतिहास में यह न पढ़ाया जाये कि मुस्लिम हमलावरों ने हिन्दू मंदिरों को तोड़ा, हिन्दुओं को जबरन धर्मान्तरित किया, उन पर अनेक अत्याचार किये। मौलाना ने नेहरू की सलाह को मानते हुए न केवल सत्य इतिहास को छिपाया अपितु उसे विकृत भी कर दिया।

रानी कर्णावती और मुगल बादशाह हुमायूँ के किस्सों के साथ भी यही अत्याचार हुआ। जब रानी को पता चला कि बहादुर खान उस पर हमला करने वाला है तो उसने हुमायूँ को पत्र तो लिखा। मगर हुमायूँ को पत्र लिखे जाने का बहादुर खान को पता चल गया। बहादुर खान ने हुमायूँ को पत्र लिख कर इस्लाम की दुहाई दी और एक काफिर की सहायता करने से रोका।

मिरात-ए-सिकंदरी में गुजरात विषय से पृष्ठ संख्या 382 पर लिखा मिलता है- सुल्तान के पत्र का हुमायूँ पर बुरा प्रभाव हुआ। वह आगरे से चित्तौड़ के लिए निकल गया था। अभी वह ग्वालियर ही पहुंचा था। उसे विचार आया, ''सुलतान चित्तोड़ पर हमला करने जा रहा है। अगर मैंने चित्तौड़ की मदद की तो मैं एक प्रकार से एक काफिर की मदद करूँगा। इस्लाम के अनुसार काफिर की मदद करना हराम है। इसलिए देर करना सबसे सही रहेगा।'' यह विचार कर हुमायूँ ग्वालियर में ही रुक गया और आगे नहीं बढ़ा।

इधर बहादुर खान ने जब चित्तौड़ को घेर लिया। रानी ने पूरी वीरता से उसका सामना किया। हुमायूँ का कोई नामोनिशान नहीं था। अंत में जौहर करने का फैसला हुआ। **किले के दरवाजे खोल दिए गए। केसरिया बाना पहनकर पुरुष युद्ध के लिए उतर गए। पीछे से राजपूत औरतें जौहर की आग में कूद गई। रानी कर्णावती 13000 स्त्रियों के साथ जौहर में कूद गई। 3000 छोटे बच्चों को कुँए और खाई में फेंक दिया गया। ताकि वे मुसलमानों के हाथ न लगे। कुल मिलकर 32000 निर्दोष लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।**

बहादुर खान किले में लूटपाट कर वापस चला गया। हुमायूँ चित्तौड़ आया। मगर पूरे एक वर्ष के बाद आया। परन्तु किसलिए आया? अपने वार्षिक लगान को इकठ्ठा करने। ध्यान दीजिये यही हुमायूँ जब शेरशाह सूरी के डर से रेगिस्तान की धूल छानता फिर रहा था। तब उमरकोट सिंध के हिन्दू राजपूत राणा ने हुमायूँ को आश्रय दिया था। यहीं उमरकोट में अकबर का जन्म हुआ था। एक काफिर का आश्रय लेते हुए हुमायूँ को कभी इस्लाम याद नहीं आया और धिक्कार है ऐसे राणा पर जिसने अपने हिन्दू राजपूत रियासत चित्तौड़ से दगा करने वाले हुमायूँ को आश्रय दिया। अगर हुमायूँ यहीं रेगिस्तान में मर जाता। तो भारत से मुगलों का अंत तभी हो जाता। न आगे चलकर अकबर से लेकर औरंगजेब के अत्याचार हिन्दुओं को सहने पड़ते।

इरफान हबीब, रोमिला थापर सरीखे इतिहासकारों ने इतिहास का केवल विकृतिकरण ही नहीं किया अपितु उसका पूरा बलात्कार ही कर दिया। हुमायूँ द्वारा इस्लाम के नाम पर की गई दगाबाजी को हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे और रक्षाबंधन का नाम दे दिया। हमारे पाठयक्रम में पढ़ा पढ़ा कर हिन्दू बच्चों को इतना भ्रमित किया गया कि उन्हें कभी सत्य का ज्ञान ही न हो। इसीलिए आज हिन्दुओं के बच्चे दिल्ली में हुमायूँ के मकबरे के दर्शन करने जाते हैं। जहाँ पर गाइड उन्हें हुमायूँ को हिन्दू-मुस्लिम भाईचारे के प्रतीक के रूप में बताते हैं।

केन्द्रीय मन्त्री बनने पर आर्यसमाज की ओर से बधाई

श्री सुदर्शन भगत जी को भारत सरकार में आदिवासी एव जनजाति मन्त्रालय में राज्य मन्त्री बनाए जाने पर आर्यसमाज की ओर से शुभकामनाएं दी गई। शुभकामनाएं देते दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, मन्त्री श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री जोगेन्द्र खट्टरएवं श्री वेद प्रकाश आर्य।

महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, झाबुआ (म.प्र.) की छात्रा दीक्षा जोशी ने जीते दो स्वर्ण पदक

बामनिया स्थित महाशय धर्मपाल दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के तत्त्वावधान में बेगलाम कर्नाटक में 30 अगस्त 2017 को आयोजित सिलिंग शाट (गुलेल) प्रतियोगिता में भाग लेने वाली छात्राओं के प्रदर्शन ने यह सिद्ध कर दिया कि समर्पण, मेहनत और लगन से किसी भी मंजिल को पाया जा सकता है क्योंकि ऐसा ही कर दिखाया है महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन की छात्रा दीक्षा जोशी ने, जिसने प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर दो स्वर्ण पदक जीते। दीक्षा ने नेशनल चैंपियनशिप में गोल्ड मैडल जीतकर अपने माता-पिता के साथ आर्य समाज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ और राज्य के स्कूल का नाम रोशन किया।

दीक्षा जोशी न केवल खेल में ही बल्कि, पढ़ाई में भी अव्वल रहती है। इस विजेता बेटी को संस्था के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी (MDH), विनय आर्य, महामंत्री जोगेंद्र खट्टर, शिक्षा निदेशक श्रीमती अनु वासुदेवा प्राचार्य प्रवीण अत्रे, खेल शिक्षक नवीन सोलंकी समेत स्कूल कमेटी ने शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया।

प्रेरक प्रसंग

उन्होंने एक सृष्टि ही रचकर दिखा दी

पंडित हरिकृष्ण किचलू एक कश्मीरी सज्जन थे। पण्डित गुरुदत्तजी विद्यार्थी तथा महात्मा हंसराज के सहपाठी थे। पण्डित गुरुदत्तजी के प्रभाव से आर्यसमाजी बन गये। वे कोयटा बिलोचिस्तान में पहले तहसीलदार थे फिर मुंसिफ बन गये। वैदिक सिद्धान्तों का बड़ा विस्तृत अध्ययन था।

तब कोयटा छोटा-सा नगर था। आर्यसमाज का अपना मन्दिर न था। पं. हरिकृष्णजी ने यह अनुभव किया कि जब तक आर्यसमाज का अपना मन्दिर नहीं बन जाता तब तक आर्यसमाज का कार्य नहीं जम सकता। आपने विशाल दुकानें बनवाईं। अब कुमारसभा बन गई। आर्य स्त्री-समाज बन गई। जब तक आर्य मन्दिर न बना लिया, हरिकृष्ण ने चैन न लिया। आर्यसमाज के वे दीवाने ऐसे ही थे।

आर्यसमाज ने अपनी पुत्री-पाठशाला का नाम इन्हीं के नाम पर हरिकृष्ण आर्य कन्या पाठशाला रक्खा। लोगों ने एक गली का नाम भी इनके नाम पर हरिकृष्ण स्ट्रीट रखा। ये सब-कुछ इनकी सेवा तथा ऊँचे चरित्र का प्रभाव था।

इनके बारे में रोचक घटना इस प्रकार से है कि इनके एक और भाई प्रद्युम्नकृष्ण थे। ये दोनों जुड़वाँ जन्में थे। दोनों का रंग-रूप, आवाज तथा बातचीत का ढंग भी बहुत मिलता-जुलता था। इससे मिलने वालों को प्रायः भ्रम हो जाया करता था। पं. लेखरामजी का हरिकृष्ण से बड़ा स्नेह था। दोनों मिलकर देर तक ज्ञानचर्चा किया करते थे। कई बार ऐसा होता था कि पण्डित जी प्रद्युम्न को हरिकृष्ण समझकर आर्य सामाजिक चर्चा छेड़ देते। वे आर्यसमाजी न थे। इस पर हरिकृष्णजी हँस पड़ते थे।

जिन लोगों ने तन-मन-धन से आर्यसमाज की निस्वार्थ सेवा करके अपना जीवन सफल किया पण्डित श्री हरिकृष्ण जी बी. ए. उनमें से एक थे।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ के अन्तर्गत संचालित

'सहयोग' आपके सहयोग से ला सका हजारों चेहरों पर मुस्कान

नाम आपका, 'सहयोग' आपका, पुण्य आपका, धन, यश, बल और कीर्ति भी आपकी

पिछले दिनों आर्य समाज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम ने समाजसेवी माननीय महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से '' सहयोग '' योजना का शुभारम्भ करते हुए सभी आर्य समाजो, आर्य संस्थाओं और आर्य परिवारों समेत महानुभावो से एक अपील की थी कि जरुरतमंद लोगों की मदद के लिए कपडें, जूते चप्पल, खिलोने, किताबें आदि देकर सहायता करें यानि के बिना उम्मीद, बिना लालच के जरूरतमंद लोगों की मदद करें। इस योजना के अन्तर्गत लोगो के जनसहयोग से नये एवं पुराने कपड़े जरूरतमन्द लोगों तक पहुचाने का बीड़ा आर्य समाज ने उठाया था मैं हर्ष के साथ लिख रहा हूँ कि आप सभी के सहयोग से बहुत अल्प समय में आज यह योजना हजारों जरूरतमंद लोगों की मुस्कान बन गयी.

आप लोगों ने "सहयोग" योजना में जो मदद की उसके लिए आप सभी का आभार न केवल आर्य समाज कर रहा बल्कि हर एक वो जरूरतमंद कर रहा है जिस तक आपकी दी यह मदद पहुंची। आप सभी के साथ-साथ ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन आफ इंडिया (टीसीआई) ने सेवा के इस पावन कार्य में सहयोग का साथ दिया और निशुल्क सारा सामान दिल्ली से आदिवासी इलाकों में पहुचाया, करीब दो हजार से अधिक बच्चे, बड़े एवं महिलाओं के कपड़ो का वितरण किया गया. हर कोई खुश था, हर किसी के चेहरे पर एक अनोखी प्रसन्नता की आभा डोल रही थी। आर्य समाज की जय-जयकार के साथ हर एक जरूरतमंद के मन से आप सभी के लिए दुआ निकल रही थी। शायद यही स्वर्ग का सुख, जीवन का मोल और समर्पण का आनंद होता होगा। जो मानवता के शास्त्र में आर्य समाज और आप सभी के सहयोग से लिखा गया है। अब प्रतिमाह संस्था द्वारा इस तरह कपड़ो का वितरण किया जायेगा

महाशय जी ने इस योजना को अमली जामा पहनाते हुए कहा था कि जो लोग यह सोच कर शुरुआत नहीं करते की वो तैयार नहीं हैं, वो कभी तैयार नहीं होते, सहयोग समाज सेवा का बहुत अच्छा सुझाव है हमें इस पर भरोसा है तो अब हमें इसकी शुरुवात कर देनी चाहिए। यही प्रेरणा आज बामनिया पहुंची। शायद आपके दिए वो कपडे उन गरीब बच्चों ने किसी ने विवाह तो किसी समारोह में पहनने के लिए रखे होंगे, सोचिये! जो कपडें अभी तक आपकी अलमारी में अनुपयोगी पड़े थे आज उन्हें किसी ने सुन्दर सपनों के साथ सम्हालकर रखा हुआ है। यही पुण्य का अर्थ है यही त्याग का सही और सच्चा अर्थ है इसी विसर्जन का नाम त्याग है। जरूरत के समय किसी के काम आने से बुरे वक्त में किसी का सहारा बनने से बड़ा पुण्य भला दुनिया में क्या होता होगा कि हमारे द्वारा दी गयी मदद से किसी का तन ढक सकती है किसी की जिन्दगी में बदलाव आ सकता है, ऐसा कार्य जो परलोक में भी साथ चलेगा, जब आप गुनाह करते हैं तो आप ने देखा होगा आप का दिल जोर जोर से धड़कना शुरू कर देता है लेकिन जब किसी जरूरतमंद की मदद करते है उसे सहायता देते है तो आपके दिल से जो आवाज आती है वही स्वर्ग का संगीत बन जाता है।

यदि आप भी सहयोग को सहयोग करना चाहते हैं तो **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं।

मध्य प्रदेश के आदिवासी जिले झाबुआ के अन्तर्गत बामनिया में सहयोग द्वारा एकत्र सामग्री - वस्त्र, किताबों, खिलोने आदि का वितरण

विभिन्न महानुभावों द्वारा सहयोग के लिए दिया गया सहयोग

सहयोग द्वारा प्राप्त सहयोग का भण्डारण, प्रैस एवं पैकिंग का कार्य

Veda Prarthana - 13

O Protector of All ! Fill Me Up with Happiness and Bless

- Acharya Gyaneshwarya

अपां मध्ये तस्थिवांसं
तृष्णाविदज्जरितारम्।
मृला सुक्षत्र मृळय।।

Apam madhye tasthi vansam trshna avidat jaritaram. Mrda sukshatra mrdaya.

(Rig Veda 7/89/ 4)

Jaritaram I, Your dispirited unhappy devotee, tasthivans am madhye apam sitting in the middle of the water, i.e. surrounded by water on all sides trshna avidat am still thirsty. Sukshatra O Protector of all, mrda You make everyone happy, mrdaya make me also happy.

Dear God, You are the Ultimate Source and Storehouse of giving us happiness and bliss. You are the giver of physical and spritual ireasuas of life. You have filled up this world with all kind of things which make our life comfortable, pleasurable and joyful. Whatever, we need in life You help us find it by giving us wisdom, strength and wealth. Dear God, with Your help I have found prosperity in my life and I do not lack material things. However, as I am getting older, I am also observing that with time my needs and wants have increased. I want a more luxurious house; more conveniences such as central Air whighoing and heading, more expensive clothes, foods and cars; and servants waiting on me etc. etc. As soon as one desire is fulfilled, a new desire emerges along with the intense feeling that it should be gratified quickly without delay.

O Dear God! You are the Eternal Source of Bliss, with Your grace I now realize that for a long time I have been under an illusion. I had mistakenly believed that the solution to all my unhappines was that by earning more and more wealth as well as by acquiring more and more creature comforts I will become happier and more contented. I had believed that by fulfilling the desires of my mind and all my senses such as by hearing melodious Music for my ears; touching soft and pleasurable things; seeing attractive and beautiful persons; smelling most fragrant flowers and perfumes; enjoying eating tasty exotic foods; fulfilling my sexual desires; travelling to scenic places and seeing palatial palaces etc, I will finally feel contented, fulfilled, happy and joyful in my life. However, I now know that while others may think that I am enjoying a luxurious and happy life, I personally find myself a slave to my mind's desires and senses. I find that I am neither contented nor happy. I find my life, without a meaningful purpose, akin to an attractive empty can. Moreover, the desire (sanskars-memories and impressions deeply rooted in the mind) to fulfill these spiritually purposeless pursuits have become so strong and so intensely established in my mind that even if I want to change the direction of my life, I fail. Instead I succumb to fulfilling the desires of my mind and the senses. Even though intellectually I know that my soul is the master of my mind, body and the senses, practically these intense desires have suppressed the executive and will power of my soul. I often know what is the truth and dharma (virtuous thing to do), what are the ideals I should follow in life, what are my duties to my family and the society, what will bring me true happiness, fulfillment and joy, yet due to my mind's weakness I do not follow them completely. Dear God my condition has become so pitiful that even when I know that certain things and actions are wrong, unjust, untrue or sinful and will eventually lead to unhappiness of misery, yet I find myself helpless and unable to stop from carrying out the unwanted actions.

Dear God You are Omnipresent and Omniscient, You see and know everything. Nothing is hidden from You, You even know what goes on inside our minds because You are present inside our soul. Dear God, with Your grace, I have been successful in acquiring a lot of physical prosperity and have been able to enjoy an enormous types of physical pleasures of the senses. However, as you know I have not found happiness, joy, peace or contentment in my mind or soul. I have finally realized that the thirst for enjoying sensual pleasures is such a strange thirst, the more you try to quench it by acquiring and enjoying more and more sensual pleasures the more thirsty you get. The thirst thus is never quenched. Ancient rishis in the Upanishads have succinctly stated that even if a person could acquire all of the earth's wealth and all of the things that give physical pleasure, the desire to enjoy more will not be fulfilled and the person will want more. The person will still not be contented. Dear God, You have given me much virtuous knowledge through the Vedas and saintly persons, nevertheless, because I have not adopted the message of the Vedic knowledge in the conduct of my daily life, I feel like a man who is thirsty while surrounded by water on all sides.

Dear God You are the Ocean of Kindness, with Your benevolence I have finally learnt that while water can quench the thirst of a person who feels thirsty and whose mouth and throat feel dry and parched yet the water can not satisfy him/her if he/she is hungry and has a growling stomach. Similarly, while food can fill up a person's stomach and allay hunger pangs, yet food does not provide shelter to the person; for a shelter one needs a house. Dear God, in a similar manner, I now know that to find peace, happiness, joy and contentment in my life and quench the thirst of my soul I do not need physical or sensual pleasures but rather my soul needs to be consciously and constantly close to You to spontaneously experience and enjoy bliss directly from You, the Source and Storehouse of all Bliss.

Dear God, the great surprise and perplexity, however, is that I have so far not fully realized or appreciated that You, the Sourece of all Bliss, have been present both inside as well as outside my soul since eternity. All I need to do is seek You within my soul instead of fulfilling the desires of my mind and all my senses and spending all my time and energy in outside things trying to earn more wealth or acquiring more and more creature comforts. You alone will quench the thirst of my unhappines as well as lack of peace and contentment. Dear God, You are Protector of all, You make everyone happy, please give me wisdom, courage and determination as well as shower Your grace on me so that from now on I become constantly close to You and experiencing bliss directly from You may I find my life completely fulfilled and jouydful.

(To getrid of your discouragement in life: also se mantra # 22)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 28 (अ) **छन्द रचना**

गतांक से आगे....

शिखरिणी : इस छन्द के प्रत्येक पाद में 17 वर्ण होते हैं और पहले 6 तथा फिर 11 वर्णों के बाद यति होती है। इस का लक्षण इस प्रकार से है:

रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।

जिसमें यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु तथा गुरु के क्रम से प्रत्येक चरण में वर्ण रखे जाते हैं और 6 वें 11वें वर्ण पर यति होती है, उसे शिखरिणी छन्द कहते हैं। जैसे:

यगण मगण नगण सगण भगन लघु गुरु
।ऽऽ, ऽऽऽ, ।।।, ।।ऽ, ऽ।। । ऽ

यदा किञ्चिज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित् किंचित् बुधजनसकाशादधिगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।। नीतिशतक

इन्द्रवज्रा : इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं । इस का लक्षण इस प्रकार से है:

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

इसका अर्थ है कि इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु के क्रम से वर्ण रखे जाते हैं । इसका स्वरूप इस प्रकार से है:

ऽऽ । ऽऽ । ।ऽ । ऽऽ
तगण तगण जगण दो गुरु

उदाहरण:

ऽ ऽ । ऽऽ । ।ऽ । ऽ ऽ

विद्येव पुंसो महिमेव राज्ञः
प्रज्ञेव वैद्यस्य दयेव साधोः ।
लज्जेव शूरस्य मुजेव यूनो,
सम्भूषणं तस्य नृपस्य सैव।।

यहाँ प्रत्येक पंक्ति में प्रथम पंक्ति वाले ही वर्णों का क्रम है । अतः यहाँ इन्द्रवज्रा छन्द है ।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा
वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज वेद मन्दिर सी.पी. ब्लाक, मौर्य एन्केलव पीतमपुरा का वार्षिकोत्सव 13 से 17 सितम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसरपर महिला सम्मेलन, यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं आध्यात्मिक प्रवचन आयोजित किए जाएंगे। समापन समारोह 17 सितम्बर करे पात: 7:30 से 1 बजे तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर भजन श्री सत्यपाल पथिक एवं प्रवचन श्री विद्याभानु शास्त्री जी के होंगे।

- सोहनलाल आर्य, मन्त्री

आर्य समाज गांधी नगर दिल्ली में
भक्ति यज्ञ एवं सत्संग

आर्य समाज गांधी नगर दिल्ली -31 सोमवार 2 अक्तूबर को प्रात: 8:30 से 12 बजे तक भक्ति यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन कर रहा है। *- मन्त्री*

आर्य समाज रोहतास नगर का
52वां श्रावणी पर्व

आर्य समाज रोहतास नगर, शिवाजी पार्क शाहदरा दिल्ली के तत्त्वावधान में 52वां श्रावणी पर्व 14 से 17 सितम्बर 2017 के बीच आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ एवं पं. रघुनाथ देव 'वैदिक भूषण' जी का प्रवचन होगा।

-आर्य विकास कुमार शर्मा

संगीतमय वेद कथा

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली के द्वारा संगीतमय वेद कथा का आयोजन 11 से 15 सितम्बर तक नगरवन पार्क सागरपुर में सायं 4:30 से 6:30 बजे तक किया जा रहा है। वक्ता डॉ. कैलाश कर्मठ होंगे। 9-10 सितम्बर को प्रभातफेरी निकाली जाएगी। प्रात:कालीन यज्ञ-भजन-प्रवचन आर्यसमाज में होंगे।

- बचनसिंह आर्य, मन्त्री

आर्यन अभिनन्दन समारोह

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 17 सितम्बर 2017 को दिल्ली में आर्यों का अभिनन्दन किया जा रहा है।

1. जो आर्य व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे हैं, पत्रिका निकाल रहे हैं, पुस्तक विक्रेता हैं।

2. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भाई आदि वेद प्रचार में लगे हैं।

3. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में 25 वर्ष या उससे अधिक समय से बैठकर सेवा कर रहे हैं।

हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण लिखकर इस पते पर प्रेषित करें-

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
ए-41, लाजपत नगर-2, नई दिल्ली-24,
दूरभाष : 011-45791152,
29842527, मो. 9599107207

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 हेतु आवेदन पत्र

श्री प्रकाश आर्य जी
मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेन म्यांमार - 2017 के यात्रा विकल्प नं. 3 में संन्यासी/आजीव ब्रह्मचारी/वैदिक विद्वान/वानप्रस्थी के रूप में भाग लेने जाना चाहता/चाहती हूं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:

नाम :.....पिता/दीक्षादाता का नाम : .....

आयु :.....जन्म तिथि: .....

स्थाई पता : .....

.....

.....

.....

टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : .....

ई.मेल :.....

मैं आर्य समाज .....का/की सदस्य हूं।

मैं यात्रा नं. 3 में नई दिल्ली-रंगून-मांडले-रंगून-नई दिल्ली में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु. 50000/- का बैंक ड्राफ्ट, अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ (35x45 mm), वीजा फार्म भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करक मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्य समाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ)

भवदीय/भवदीया

दिनांक : ..... (आवेदक के हस्ताक्षर)

पृष्ठ 3 का शेष

को बलात् मुसलमान बना लिया गया और उन्हें सिपहसालारों, अफसरों और शहंशाह के नजदीकी लोगों और रिश्तेदारों के हरम में भेज दिया गया।

वर्ष 1526 से लेकर 1857 तक हिन्दुस्तान की सरजमीन पर मुगलों की हुकूमत रही है। शाहजहाँ को प्रेम की मिसाल के रूप पेश किया जाता रहा है और किया भी क्यों न जाए, आठ हजार औरतों को अपने हरम में रखने वाला अगर किसी एक में ज्यादा रुचि दिखाए तो वह उसका प्यार ही कहा जाएगा। आप यह जानकर हैरान हो जायेंगे कि मुमताज का नाम मुमताज महल था ही नहीं बल्कि उसका असली नाम ''अर्जुमंद-बानो-बेगम'' था और तो और जिस शाहजहाँ और मुमताज के प्यार की इतनी डींगे हांकी जाती है वह शाहजहाँ की न तो पहली पत्नी थी न ही आखिरी।

श्रावणी पर्व सम्पन्न

स्त्री आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का वेद प्रचार एवं श्रावणी समारोह गत दिनों सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर जी ने कहा कि श्रवण सुनने को कहते हैं और श्रावण सुनाने को। उन्होंने वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए मनुर्भव का सन्देश दिया। इस अवसर पर भजन श्रीमती अमृत आर्य के हुए। आर्यसमाज की मन्त्राणी श्रीमती जनक चुघ ने सभी का आभार प्रकट किया।

दरअसल इरफान हबीब जैसे इतिहासकारों का मुगल उदारता का इतिहास लेखन इस भारतीय चेतना में एक रत्ती भर परिवर्तन इसलिए नहीं कर पायी है कि पीढ़ी दर पीढ़ी उसके अत्याचारों को हिन्दुस्तान की जनता न भुला पायी है और न भुला पायेगी। मुगल मौखिख इतिहास में रहेंगे, मुगलों को इतिहास में रहना भी चाहिए ताकि हमें पता रहे कि महाराणा प्रताप से लेकर वीर शिवाजी तक हमारे वीर कैसे इन धोखेबाज लोगों से लड़े! लेकिन इस तरह नहीं जिस तरह उसे परोसा जा रहा है बल्कि उस सच के साथ जो कुकृत्य उन्होंने भारतीय जनमानस के साथ किये ताकि आने वाली पीढ़ियों को पता चले कि क्रूरता की क्या सीमा होती है, क्रूरता का क्या रूप होता है, क्रूरता का क्या रंग होता है?

इन धर्माध लोगों ने किस तरह हिन्दू समाज का पतन किया, औरंगजेब ने अपने शासनकाल में बहुत लोगों की हत्याएं कीं, बहुत लोगों को निर्ममता से प्रताड़ित किया, अधिकांश मंदिरों को तोड़ा। इतिहास गवाह है कि मुगल किस तरह के शासक थे, किस तरह यहाँ खून की होली खेलकर अपना राज्य स्थापित किया। एक कम्युनल शासक थे, मजहबी शासक थे और आज के समय में आईएसआईएस या तालिबान जो कर रही है, वह उस समय सत्रहवीं शताब्दी में करते थे, इसीलिए तो वह विलेन थे! न कि भारतीय जन समुदाय के हीरो।

-राजीव चौधरी

शोक समचार

श्री ललन राय को मातृशोक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एकाउंटेंट श्री ललन राय जी पूज्य माता श्रीमती गणेशीदेवी जी का दिनांक 27 अगस्त को निधन हो गया। वे लगभग 82 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे पुत्र-पुत्रियों एवं पौत्र-पौत्रियों से भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। इस माह 4 अगस्त को उनके पूज्य पिता जी का भी निधन हुआ था और अब उनकी माताजी भी इस नशवर काया को छोड़कर चली गई हैं। उनकी स्मृति में उनके पैतृक निवास बिहार में 9 सितम्बर को विशेष यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है।

श्री यशपाल अग्रवाल जी का निधन

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (मुम्बई) के वरिष्ठ सदस्य श्री यशपाल अग्रवाल जी का दिनांक 4 सितम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सायं 5 बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शन्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 7 सितम्बर को आर्यसमाज सान्ताक्रुज में सम्पन्न हुई।

श्री राम स्वरूप शास्त्री को पत्नी शोक

आर्यसमाज यमुना विहार के पूर्व प्रधान एवं वरिष्ठ सदस्य श्री राम स्वरूप शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती गंगा देवी जी का 3 सितम्बर की दोपहर स्थानी हस्पताल में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार सायं 5 बजे निगम बोध घाट पर किया गया।

भजनोपदेशक मोहित शास्त्री को पितृशोक

आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य जी के ज्येष्ठ भ्राता एवं भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री जी के पूजय पिता श्री राजवीर आर्य जी का 1 सितम्बर की देर रात्रि में हृदयगति रूकने से निधन हो गया। वे गत कुछ समस से अस्वस्थ थे और हृषिकेश चिकित्सालय में स्वास्थ्यलाभ ले रहे थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 सितम्बर, 2017 से रविवार 10 सितम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7-8 सितम्बर, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 सितम्बर, 2017

प्रथम पृष्ठ का शेष

पित्रादिसदृश्यों मात्रादय: सेव्या:। (पंच महायज्ञ विधि) पित्रादिकों के समान विद्यास्वभाव वाली स्त्रियों की भी अत्यन्त सेवा करनी चाहिए।

ऋषिवर ने पितृयज्ञ का महान आदर्श प्रस्तुत किया उससे सभी निकृष्ट परम्पराएँ प्रत्येक मनुष्य को त्यागने योग्य है परन्तु इसका प्रतिफल तो कुछ ओर ही रहा है। मुझे शंका होती है कि- **इस धारा में कहीं हम भी तो नहीं बह रहे है?**

यह आर्य जाति के लिए एक ज्वलन्त प्रश्न भी है। कहीं दूसरे की थाली में खीर देखकर हमारा मन तो नहीं ललचाया? अथवा हमें स्वयं की त्रुटियाँ दिखाई नहीं देती केवल दूसरों में दोष देखते हैं। यदि ऐसा है तो समझ लीजिए की एक बड़ा शत्रु हमारे भीतर ही छिपा बैठा है। कि हम मन की उन संकीर्णताओं को दूर नही कर सके, जिसके लिए ऋषिवर ने गुरु के एक आदेश पर सर्वस्व बलिदान कर दिया।

इसी बात का खेद है कि आज भी कुछ परिवारों में दो किस्तियों में पैर रख चलने का प्रयास किया जा रहा है। जो श्रेष्ठ नही है। यही कारण है कि आर्य समाज की उन्नति की गति मन्द हो रही है।

अत: हमें दृढ़ता पूर्वक ऋषि के मन्तव्यों का पालन करना होगा यह प्रतिज्ञा आज ही करनी होगी। तभी तो आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार, प्रसार होगा तभी हम तर्पण और श्राद्ध की वास्तविकता को समझेंगे, और उसकी सार्थकता को सिद्ध कर पाएँगे। जिससे राष्ट्र में ज्ञान की निर्मल धारा बहेगी, स्वर्ग आएँगा। हमारा तर्पण और श्राद्ध सफल होगा।

इसका सबसे बड़ा उत्तरदायित्व विद्वानों पर है, क्योंकि कुछ विद्वान् अच्छी दक्षिणा और खातिरदारी के सन्दर्भ में श्राद्ध जैसी क्रियाओं को स्वीकार कर लेते हैं, जहां एक आदर्शवाद अपना दम तोड़ देता है जैसाकि विदित हो कि- अर्थ भेद अज्ञानता में एक स्वार्थी मनुष्य अपना ही नहीं समाज के पतन का कारण बन जाता है। बहुत सी आधार हीन परम्पराओं में से एक है **'तर्पण और श्राद्ध'** यह क्रियाकलाप भी धर्म की चादर ओढ़कर बैठे पूजारी अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अपनी आजीविका से जोड़ बैठे जिसका परिणाम समाज के लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ।

अत: विद्वानों, पुरोहितों एवं आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों को विशेष रुप से स्वयं पर नियन्त्रण रख इस प्रवाह को रोकना है। और अपने माता-पिता अतिथियों एवं वृद्धों की सेवा में निरन्तर तत्पर रहकर उन्हे श्रद्धा पूर्वक अपनी सेवा से संतुष्ट करें श्रेष्ठ परम्पराओं को बढ़ाएं तभी हमारा तर्पण और श्राद्ध का वास्तविक उद्देश्य पूरा होगा। न कि मात्र 15 दिनों के लिए ही यह कर्म किया जाए। क्योंकि यह तो मनुष्य का जीवन पर्यन्त कर्तव्य है और यही वेद का आदर्श है। जब हम दृढ़तापूर्वक इन आर्दशों का पालन करेंगे तभी तो एक सरल, सुन्दर और वैदिक परम्परा बनेगी यदि हम आर्य होकर स्वयं ही इन सामाजिक श्रेष्ठ नीतियों का पालन नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा?

कैसे ये रूढ़ि परम्पराएं बदलेगी। इसलिए पहल तो करनी ही होगी हमें ही आगे आना होगा 'तर्पण और श्राद्ध' केवल 15 दिनों के लिए ही नहीं हमारे जीवन का दैनिक भाग बन जाएं, ज्येष्ठों का आशीष और अनुजों का प्रेम बनकर एक धारा बहने लगें। घर स्वर्ग बन जाएं बस यही तो चाहिए।

अत: सामाजिक सभी परम्पराओं को वास्तविक एवं वेदोक्तरुप से ही मनाना अभीष्ट है।

प्रतिष्ठा में,

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली-110014

प्रधान - श्री अनिल नागपाल
मन्त्री - श्री ए. सी. धीर
कोषाध्यक्ष - श्री एस. के. वलेचा

आर्य समाज सी. पी. ब्लाक मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा दिल्ली

प्रधान - श्री ब्रतपाल भगत
मन्त्री - श्री सोहनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री राकेश ठुकराल

स्त्री आर्य समाज सी. पी. ब्लाक मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा दिल्ली

प्रधाना - श्रीमती सुशीला सेठी
मन्त्रीणी - श्रीमती सुधा शर्मा

आर्य समाज सैनिक विहार पीतमपुरा दिल्ली

प्रधान - श्री विनोद प्रकाश गुप्त
मन्त्री - श्री विनय खुराना
कोषाध्यक्ष - श्री सुधाकर शाह गुप्ता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह